भारत सरकार

रेल मंत्रालय

**राज्य सभा**

**23.03.2018 के**

**तारांकित प्रश्न सं. 315 का उत्तर**

**रेल लाइनों का दोहरीकरण**

\***315. डा. कनवर दीप सिंह:**

**क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः**

(क) क्या देश में प्रति वर्ष रेल लाइनों के दोहरीकरण का कार्य किया जा रहा है;

(ख) यदि हां, तो विगत तीन वर्षों के दौरान निर्धारित किए गए लक्ष्यों तथा पूरे किए गए लक्ष्यों का वर्ष-वार और राज्य-वार ब्यौरा क्या है;

(ग) इन लक्ष्यों की प्राप्ति में यदि कोई अंतर विद्यमान है, तो उसके क्या कारण हैं; और

(घ) परियोजनाओं को शीघ्रतापूर्वक संपन्न करने हेतु रेलवे द्वारा क्या-क्या कदम उठाए जा रहे हैं?

**उत्तर**

**रेल और कोयला मंत्री (श्री पीयूष गोयल)**

(क) से (घ) : एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।

 \*\*\*\*\*

रेल लाइनों के दोहरीकरण के संबंध में दिनांक 23.03.2018 को राज्‍य सभा में डा. कनवर दीप सिंह के तारांकित प्रश्‍न सं.315 के भाग (क) से (घ) के उत्‍तर से संबंधित **विवरण।**

(क) और (ख): जी हां। रेलों द्वारा दोहरीकरण/तीसरी एवं चौथी लाइनों की परियोजनाएं सतत आधार पर शुरू की जाती हैं। दोहरीकरण को पूरा करने के लक्ष्‍यों को प्रत्‍येक वर्ष अंतिम रूप दिया जाता है, जो लास्‍ट माइल कनेक्‍टिविटी परियोजनाओं, मौजूदा मार्गों के विसंकुलन, मौजूदा मार्गों की महत्‍ता, हैवी फ्रेट कॉरीडोर आदि पर निर्भर करते हैं। पिछले तीन वर्षों में दोहरीकरण के निर्धारित किए गए और पूरे किए गए लक्ष्‍यों का ब्‍यौरा निम्‍नानुसार है:

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **वर्ष** | **लक्ष्‍य (कि.मी.)** | **उपलब्‍धि (कि.मी.)** |
| 2015-16 | 1200 | 972.66 |
| 2016-17 | 1600 | 882.71 |
| 2017-18 | 945\* | 737.52 (फरवरी 2018 तक) |

\* रेलपथ नवीकरण को प्राथमिकता दी जाती है। इसलिए, लक्ष्‍य में कमी आई है।

 दोहरीकरण/तीसरी एवं चौथी लाइनों को चालू करने की राज्‍य-वार प्रगति निम्‍नानुसार है:

|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| **क्र.सं.** | **राज्‍य**  | **दोहरीकरण / तीसरी एवं चौथी लाइनों को चालू करने की प्रगति** |
|  |  | **2015-16** | **2016-17** | **2017-18** |
| 1 | आंध्र प्रदेश | 17.75 | 10 | - |
| 2 | बिहार | 56 | 82.35 | 20.3 |
| 3 | छत्‍तीसगढ़ | 65.2 | 61.5 | 94.50 |
| 4 | गुजरात | 101.32 | 84 | 26 |
| 5 | हरियाणा | 28 | 38 | 14.5 |
| 6 | जम्‍मू एवं कश्‍मीर | 6.5 | - | - |
| 7 | झारखंड | 42.73 | 60.6 | 10 |
| 8 | कर्नाटक | 94.48 | 22.57 | 29 |
| 9 | केरल | - | 30.96 | - |
| 10 | मध्‍य प्रदेश | 70.58 | 60.5 | 9 |
| 11 | महाराष्‍ट्र | 28.35 | 36 | 108 |
| 12 | ओडिशा | 78.37 | 53.27 | 141.98 |
| 13 | पंजाब | 77.71 | 16 | 2.5 |
| 14 | राजस्‍थान | 27 | 21 | 44.4 |
| 15 | तेलंगाना | 25 | - | - |
| 16 | तमिलनाडु | 95 | 130.26 | 69.11 |
| 17 | उत्‍तर प्रदेश | 37.61 | 74.83 | 132 |
| 18 | पश्‍चिम बंगाल | 121.06 | 100.87 | 36.23 |
|  | **कुल** | **972.66** | **882.71** | **737.52** |

(ग) और (घ): दोहरीकरण/तीसरी/चौथी लाइन परियोजनाएं मौजूदा रेलपथ के निकट ही निष्‍पादित की जाती हैं और इनमें मौजूदा रनिंग गाड़ियों की संरक्षा भी होती है। इसके अलावा, दोहरीकरण परियोजनाओं को चालू करने के लिए प्रत्‍येक यार्ड में बड़ी संख्‍या में आशोधन कार्य निष्‍पादित करने होते हैं। इन यार्ड रिमॉडलिंग कार्यों में यातायात ब्‍लॉक, गति प्रतिबंध, गैर-इंटरलॉकिंग कार्य और माल एवं यात्री गाड़ियों का रद्दकरण/डायवर्ज़न भी शामिल होता है। इसके परिणामस्‍वरूप गाड़ियां देरी से चलती हैं, जिससे जनप्रतिनिधियों और जनता से शिकायतें प्राप्‍त होती हैं। इसलिए, यातायात ब्‍लॉक और गति प्रतिबंधों के बीच संतुलन रखना पड़ता है। उक्‍त कारणों से 2015-16 एवं 2016-17 में लक्ष्‍य पूरे नहीं हो पाए थे क्‍योंकि उच्‍च लक्ष्‍य निर्धारित किए गए थे। 2015-16 एवं 2016-17 में नई लाइन/आमान परिवर्तन/दोहरीकरण को चालू करने के समग्र लक्ष्‍य दोनों वर्षों के लिए 2800 कि.मी. थे। भारतीय रेल ने इन 2800 कि.मी. के लक्ष्‍य की तुलना में 2015-16 एवं 2016-17 में नई लाइन / आमान परिवर्तन / दोहरीकरण की क्रमश: 2828 कि.मी. एवं 2855 कि.मी. लाइनें चालू की गई हैं।

 इसके अलावा, 2017-18 के दौरान रेलपथ नवीकरण के संरक्षा निर्माण कार्यों को उच्‍चतम प्राथमिकता दी गई है। पटरियों की सप्‍लाई की क्षमता संबंधी तंगियों के कारण, वर्ष 2017-18 के लिए दोहरीकरण/तीसरी एवं चौथी लाइनों को चालू करने के लक्ष्‍य संशोधित किए गए हैं तथा कम कर दिए गए हैं ताकि क्षतिग्रस्‍त और नवीकरण हेतु बकाया खंडों के लिए पर्याप्‍त पटरियां उपलब्‍ध हों।

 दोहरीकरण/तीसरी एवं चौथी लाइनों को चालू करने की विस्‍तृत योजना बनाई गई है और 2018-19 के लिए 2100 कि.मी. का लक्ष्‍य रखा गया है। इसके अलावा, पर्याप्‍त निधि सुनिश्‍चित करने के लिए, अर्थक्षम परियोजनाओं के सुनिश्‍चित वित्‍तपोषण के लिए संस्‍थागत वित्‍त के जरिए मैसर्स भारतीय जीवन बीमा निगम लिमिटेड के साथ 1.5 लाख करोड़ रुपए के ऋण की व्‍यवस्‍था की गई है, जिससे रेलवे की क्षमता और अनिवार्य परियोजनाओं हेतु आवश्‍यक निधि प्रावधान में बढ़ोतरी हुई है।

\*\*\*\*\*